काव्य लक्षण

हिंदी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष, पत्र-6

साहित्य जगत में काव्य का कोई एक सर्वमान्य लक्षण निहित नहीं है । संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य पर पर्याप्त विचार विमर्श हुआ है जिससे विभिन्न काव्य संप्रदायों का विकास हुआ फलस्वरूप काव्य के प्रमुख तत्वों की चर्चा करते हुए काव्य लक्षण निर्धारित करने का प्रयास किया गया है ।

कुछ प्रमुख काव्य-शास्त्रियों द्वारा निर्मित काव्य लक्षण निम्नलिखित हैं -

भामह (छठी शताब्दी)

- 'शब्दार्थौं सहितौ काव्यम' अर्थात शब्द और सहित भाव को काव्य कहते हैं।

आचार्य दंडी (7वीं शताब्दी)

- 'शरीरंतावदिष्टार्थ व्यवच्छिना पदावली'

अथार्त ईस्ट अर्थ से युक्त पदावली तो उसका(काव्य का)शरीर मात्र है ।

आचार्य मम्मट (11वीं शताब्दी) -

'तददोषौ शब्दार्थऔ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि'

अर्थात दोषरहित, गुणसहित और यथासंभव अलंकारयुक्त शब्द तथा अर्थ को काव्य कहते हैं ।

आचार्य विश्वनाथ (14वीं शताब्दी) -

'वाक्यं रसात्मक काव्यं'

अर्थात रसात्मक वाक्य ही काव्य है ।

आचार्य जगन्नाथ (17वीं शताब्दी) -

'रामणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम'

अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है ।

हिंदी आचार्यों द्वारा निर्मित काव्य लक्षण कुछ इस प्रकार हैं-

आचार्य रामचंद्र शुक्ल -

"जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है । हृदय की इस मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं ।"

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी -

"किसी प्रभावोत्पादक और मनोरंजक लेख, बात या वक्तृता का नाम कविता है ।"

कुछ पाश्चात्य समीक्षकों द्वारा निर्दिष्ट काव्य लक्षण इस प्रकार हैं -

अरस्तू - "poetry is an art. Art is imitation of mature.Epic poetry,tragedy and comedy in most of there forms are all in their Conception, modes of imitation."

वर्ड्सवर्थ -

"poetry is is the spontaneous overflow of powerfull feeling . it takes its origin from emotion recollected in tranquility."

मैथ्यू आर्नल्ड -

"poetry at bottom is the criticism of life."

कॉलरिज -

"poetry is the best word in the best order."

हडसन -

"poetry is the interpretation of life through imagination and emotion."

निष्कर्षतः इस आधार पर हम कह सकते हैं कि काव्य की सर्वमान्य परिभाषा दे पाना कठिन है क्योंकि कविता प्रत्येक काल में अपना रूप बदलती रहती है फिर भी काव्य के स्वरूप को स्पष्ट करने वाले कुछ लक्षण दिए जा सकते

हैं,यथा-(क)मानवीय अनुभूति, (ख)भाषा द्वारा उसकी अभिव्यक्ति तथा (ग) अभिव्यकि में कलात्मकता ।

अतः इन लक्षणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि मानवीय अनुभूतियों द्वारा भाषा के माध्यम से की गई रसात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति ही कविता है ।

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना ।